



सी बी आई
बु ले टि न



CBI
Bulletin

A CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION PUBLICATION

खण्ड 5, अंक 9—सितम्बर 1997

Vol. V, No. 9—SEPTEMBER 1997



RESTRICTED FOR POLICE USE

सी बी आई बुलेटिन



CBI Bulletin

A CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION PUBLICATION

खण्ड 5, अंक 9—सितम्बर 1997

Vol. V, No. 9—SEPTEMBER 1997

OFFICIAL PUBLICATION OF
THE CENTRAL BUREAU OF
INVESTIGATION
(INDIA)

Central Bureau of Investigation
(Coordination Division)
Lok Nayak Bhavan (8th Floor)
Khan Market
New Delhi-110 003
Tel : 4624884

The views expressed in the 'CBI
Bulletin' are exclusively of the
authors and do not correspond
necessarily to the official views of the
Central Bureau of Investigation.

Front Cover : North Block, the Seat of
Union Govt., New Delhi
by DEBASIS BAGCHI
Back Cover : Celebrating 50th Year of
Independence
by DEBASIS BAGCHI

RESTRICTED FOR POLICE USE

EDITORIAL BOARD

Managing Editor
R.C. SHARMA
Director, CBI

Executive Editor
D.R. KARTHIKEYAN
Special Director (S&E)
CBI

Editor
RAJENDRA KAUL
Dy. Director
(Coordination Dn.), CBI

DEBASIS BAGCHI
DIG, SIG, CBI
(in current charge)

Associate Editor
K.N. GUPTA
Asstt. Director
(Coordination Dn.), CBI

CONTENTS

2 सम्पादकीय/EDITORIAL

4 **FOCUS**
ROLE AND FUNCTION OF PROSECUTION IN
CRIMINAL JUSTICE [PART-I] —M.L. Sharma

10 **FEATURES**
THE ART & SCIENCE OF FINGERPRINTING : DOWN
THE MEMORY LANE (Finger Print Bureau,
West Bengal)

13 GENDER SENSITISATION OF POLICE OFFICERS IN
DEALING WITH WOMEN AND CHILDREN—DURING
INVESTIGATION OF CASES —P.M. Nair

18 ETIOLOGY OF CRIMES COMMITTED BY CONVICTS
OF INDIAN PRISONS —B.V. Trivedi &
Dr. (Mrs.) Rita Tiwari

27 MANAGING TENSIONS IN STRESSFUL LIFE IN POLICE
SET-UPS —Dr. Arun Kumar Gupta

विशेष लेख

32 सड़क दुर्घटनाओं में मानवीय पहलू
— एम् गुप्ता

36 चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था — डॉ. उर्वी

40 NEWS & NOTES

45 LEGAL NOTES

58 IN HOME NEWS

65 BOOK REVIEWS/पुस्तक-समीक्षा

67 MOST WANTED CRIMINALS

75 INTERPOL NOTICES

चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था

डॉ० उर्वी*

किसी भी राष्ट्र की उन्नति में एक आदर्श शासन व्यवस्था का बहुत बड़ा योगदान है। प्रचीन भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्य एक आदर्श राज्य के रूप में माना जाता है। उसका बहुत बड़ा कारण यह था कि उसकी स्थापना और संचालन में कौटिल्य जैसे राजनीतिज्ञ निष्णात कुशल मंत्री और आचार्य का योगदान रहा। कौटिल्य ने ही बहुत चतुराई से नीतिपूर्वक जनता को नन्दवंश के कुशासन से मुक्ति दिलाई और चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन स्थापित किया। यह उसके बुद्धि-चातुर्य का फल था कि उसने नन्दों के अतिकुशल अमात्य को चन्द्रगुप्त का अमात्य बनाया और स्वयं शासन सत्ता से दूर रह कर ही मार्गदर्शन करता रहा। मुद्राराक्षस नाटक में नाटककार विशाखदत्त ने सारी परिस्थितियों का इतना सजीव चित्रण किया है कि सब घटनाएं वास्तविक प्रतीत होती हैं।

वस्तुतः सम्पूर्ण नाटक में राक्षस तो अपने राजा नन्द की हत्या का बदला लेने का उपाय करता है परन्तु चाणक्य अपनी सारी बुद्धि इसमें लगाता है कि वह किस प्रकार राक्षस को चन्द्रगुप्त का समर्थक बनाए। चाणक्य हृदय से चाहता है कि यदि राक्षस चन्द्रगुप्त का मंत्री बन जाए तो बहुत उत्तम हो। अपनी सभी योजनाओं को वह इस प्रकार कार्यान्वित करता है कि राक्षस को स्वयं चाणक्य के पास आना पड़ता है। राक्षस की नन्द के प्रति अटूट भक्ति को देखकर ही चाणक्य उसे चन्द्रगुप्त का मंत्री बनाने का निश्चय करता है। चाणक्य विष्णु शर्मा नामक ब्राह्मण को जैन सन्यासी बनाकर कुसुमपुर में भेज देता है जो राक्षस का विश्वासपात्र बनकर उसके सारे कार्यों का भेद लेता है। इसी प्रकार चाणक्य का एक गुप्तचर है निपुणक, वह योगी के वेश में है तथा राक्षस के सहायक व्यक्तियों के विषय में सूचना देता है। चाणक्य के सभी गुप्तचर राक्षस के गुप्तचरों में मिले हैं उनके द्वारा राक्षस की योजनाएं जान कर चाणक्य को सूचनाएं देते रहते हैं जिससे चाणक्य उन्हें विफल कर देता है। राक्षस को एक गुप्तचर विराधगुप्त है जो सपेरा है। उसके द्वारा राक्षस को ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त को मारने के लिए भेजी गई विषकन्या द्वारा कोई और मारा गया। चन्द्रगुप्त को दी जाने वाली औषधि (जिसमें राक्षस के वैद्य अभयदत्त द्वारा विष मिलाया गया था) उसी वैद्य अभयदत्त को पिला दी गई, वह भी मारा गया तथा राक्षस के ही गुप्तचर भी मारे गए। सिद्धार्थक चाणक्य का ही एक अन्य गुप्तचर है जो राक्षस का विश्वासपात्र बनकर उसके पास रहता है। राक्षस के मित्र शंकटदास की जान इसी ने बचाई है ऐसा राक्षस को विश्वास है। राक्षस को विश्वास दिलाने के लिए चन्द्रगुप्त और चाणक्य में बनावटी (कृतक) कलह हो जाता है। यहां तक कि चन्द्रगुप्त का कञ्चुकी भी इसे वास्तविक ही समझता है। चाणक्य का एक गुप्तचर भागुरायण है, वह राक्षस तथा मलयकेतु में फूट डालता है। इस प्रकार चाणक्य के गुप्तचर सभी बहुत गुप्त रूप से तथा योजनाबद्ध ढंग से कार्य करते हैं वे परस्पर यह भी नहीं जानते कि वे सभी चाणक्य के गुप्तचर हैं।

सभी पृथक्-पृथक् ढंग से राक्षस की रक्षा करते हैं क्योंकि ऐसी ही चाणक्य की आज्ञा है कि राक्षस के प्राणों की सर्वथा रक्षा की जाए। राक्षस को जब यह ज्ञात होता है कि चाणक्य के गुप्तचर हमारे ही बीच में थे और हमें पता नहीं चला तब वह कहता है कि शत्रु ने हमारे हृदय पर भी अधिकार कर लिया (कथं जीवसिद्धिरपि चाणक्यप्रणिधिः हन्त हृदयमपि मे रिपुभिः स्वीकृतम्) — मुद्रा पंचम अंक। चाणक्य के एक गुप्तचर द्वारा राक्षस को ज्ञात होता है कि चन्दनदास को फांसी की सजा हो रही है। वह अपना शरीर बेचकर उसे बचाना चाहता है क्योंकि शस्त्र बल से वह चन्दनदास को नहीं बचा सकता। वह स्वयं वधस्थल पर पहुंच जाता है और जल्लादों से, जो कि चाणक्य के ही गुप्तचर हैं, कहता है कि चन्दनदास को छोड़ दो और चाणक्य से कह दो अमात्य राक्षस पकड़ा गया। तभी चाणक्य और चन्द्रगुप्त आ जाते हैं, राक्षस को प्रणाम करते हैं। तत्पश्चात् शस्त्र ग्रहण करके राक्षस अपने मित्र सेठ चन्दनदास को मुक्त कराता है तथा चन्द्रगुप्त का अमात्य पर ग्रहण करता है और चन्द्रगुप्त को आशीर्वाद देता है।

इस प्रकार सम्पूर्ण नाटक के सूत्र को जानने वाला एकमात्र चाणक्य ही है जो स्वयं ऐसा गुप्तचर है जिसके पास सर्वाधिक शक्ति है जिसने सर्वत्र अपने गुप्तचरों का जाल बिछाया हुआ है जिसकी सहायता से वह शत्रु अर्थात् राक्षस के भेदों को जान लेता है। उसका एक शिष्य भी है जो उसे सभी सूचनाएं समय-समय पर देता रहता है। अतः शासन-तन्त्र में एक व्यक्ति ऐसा होना आवश्यक है जो सभी योजनाएं जानता हो, सभी क्रिया-कलाप करता हो, उसके पास ऐसे गुप्तचर हों जो शत्रु की गुप्त जानकारी भी ले सकें। यह भी आवश्यक है कि उस योजना का ज्ञान केवल सूत्रधार को होना चाहिए। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से भी इन सभी नीतियों की पुष्टि होती है जो मुद्राराक्षस नामक नाटक में दृष्टिगोचर होती हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कथानक काल्पनिक होते हुए भी लेखक द्वारा कौटिल्य के अर्थशास्त्र का गम्भीर अध्ययन के पश्चात् उसकी मान्यताओं के अनुरूप लिखा गया। इससे चाणक्य के हाथों सुरक्षित चन्द्रगुप्त की सुदृढ़ शासन व्यवस्था का दिग्दर्शन होता है। जिस प्रकार प्रणियों (गुप्तचरों) का विवरण अर्थशास्त्र में प्राप्त होता है, ठीक उसी प्रकार कुशल नाटककार द्वारा "मुद्राराक्षस में चित्रित" किया गया है।

चन्द्रगुप्त के दरबार में दूत बनकर आए मेगस्थनीज (ई.पू. 304) के वृत्तांतों से भी चन्द्रगुप्त की शासन व्यवस्था का ज्ञान होता है।

नन्द साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् चन्द्रगुप्त ने बहुत सफलता से केन्द्रीयकरण की नीति को सम्पन्न किया। एक कुशल नौकरशाही, व्यापक और संचार साधनों से अन्तःसम्बन्धित (उत्कृष्ट संचार-व्यवस्था) तथा शक्तिशाली शासक मौर्यकाल में ये तीनों विशेषताएं विद्यमान थीं जिससे यथासम्भव साम्राज्य का केन्द्रीयकरण हो सका। प्रत्येक

*प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, धौला कुआं, नई दिल्ली।